बनारस की एक शाम

गंगा किनारे बसा ये शहर, बनारस, किसी खूबसूरत तस्वीर सा मालूम पड़ता है, जिसके रंग न जाने कितने हज़ारों साल पुराने हैं, पर जितनी दफ़ा इस तस्वीरनुमा शहर को देखा जाए एक नया रंग उभर कर सामने आता है। गंगा उसी तस्वीर का दर्पण मालूम पड़ती है, जिसमें अक्सर बनारस अपनी परछाई देख कर इठलाता है।

इस तस्वीर का कुछ हिस्सा मुझे तब देखने को मिला जब कॉलेज के तीसरे साल में हम टूर पर गए। बनारस को पहली बार देखकर कुछ यूँ लगा कि मानो दुनिया से बेखबर ,अंजान ये शहर गंगा की गोद में बैठ अपना अदब लिख रहा हो, वो अदब जिसमें ज़िंदादिली का ज़िक्र था। कमाल तो कुछ यूँ है कि ये अदब किसी एक श्याही से नहीं बालाजी कायनात में मौजूद हर रंग से लिखा जा रहा है। पश्चिम से चलने वाली रविश, गंगा की आरती, घंटानाद का स्वर , आकाश में छाया शुर्ख लाल रंग जो अक्सर गंगा को भी अपने रंग में रंग जाता है, हज़ारों साल से इसी तरह खड़े बनारस के घाटों का श्रृंगार मालूम पड़ रहे थे। घाट की वो लंबी सीढियाँ जिसने न जाने कितने क़दमों की आहटें सुनी होंगी, महसूस की होंगी, गंगा और बनारस को जोड़ने वाले किसी मजबूत रिश्ते की मंनिन्द थीं।

इतनी आवाजों के बीच भी यूँ लग रहा था कि ख़ामोशी से माँगी जा रही कई दुआओं को मैं सुन पा रही थी।

घाट पर बैठे जब मैं गंगा को निहार रही थी, तो न जाने कितने ख्यालों की वो भीमी लहरें मन को छू गयीं।

गंगा का शांत सालीम स्वभाव मुझे मेरे पिता की याद दिला रहा था, जिनका मन गंगा की तरह पाक है, जो न जाने कितनी दफ़ा हमारी ज़रूरतें पूरी करने के लिए हर पथरीले रास्ते से गंगा की धार से बहते हुए निकल जाते हैं। खुदा का शुक्रिया अदा करते हुए आँखें भी ज़रा नम हो गईं, मानो गंगा की बूँदें भी मेरी आयत में शरीक हो रही हों। अचानक फिर उनका रौद्र रूप याद आया, जिसमें गंगा का तेज़ उफान नज़र आता है, और लब खिलखिला उठे।

कभी अपने पिता का दर्पण गंगा में देखती तो कभी गंगा की गहराई और उसमें डूबे राज़ों की थाह लगाती। न जाने कितनी अदबों कितनी तहजीबों का पानी और उनकी राख इसकी धार में मिली होंगी। कुछ तो ख़ास था इस पश्चिमी रविश में कि जनाजों को देख दर जाने वाली मेरी आंखों को भी मुखाग्नि की आग देख मोक्ष और सुकून का एहसास हो रहा था।

जहां एक तरफ गंगा के वैभव को मैं सराह रही थी वहीं दूसरी तरफ उसकी बदहालियों के ख्याल से दिल कसमसा रहा था।

आरती के वक़्त यूँ लग रहा था कि गंगा बेकशी में डूबी बस यह सवाल कर रही है कि आखिर कब तक यूँ ही हर रोज़ पूजकर दूषित करोगे?

और यूहीं, कई ख्यालों और सवालों में डूबी गुज़री बनारस की सुकून देती वो कोलाहल भरी शाम।

-ऐश्वर्या, 3rd year